भारत में 50 परसेंट पेशेंट सही मेडिसिन नहीं लेते : डॉ. गुरबानी

भारत सरकार और वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन मिलकर देश के रूरल एरिया में हेल्थ पर काम कर रहे हैं।

सिटी रिपोर्टर • जयपुर

भारत सरकार और वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन मिलकर देश में लगातार रूरल एरिया के हेल्थ पर काम कर रहे है। इसका उद्देश्य ज्यादा से ज्यादा लोगों को अवेयर करना होगा। मेडिसिन किसी डॉक्टर के परामर्श से ही लें, क्योंकि भारत में लगभग 50 परसेंट पेशेंट सही मेडिसिन नहीं लेते। हेल्थ फॉर ऑल इनिशिएटिव के साथ आईआईएचएमआर यूनिवर्सिटी जयपुर में डब्ल्यूएचओ के सहयोग से आयोजित प्रोग्राम में ये बाते सामने आई।

प्रोग्राम में आईआईएचएमआर यूनिवर्सिटी के डॉ. निर्मल गुरबानी, प्रोफेसर फार्मास्युटिकल मैनेजमेंट ने बताया कि युनाइटेड नेशन के यूनिवर्सल हैल्थकेयर कवरेज की पहल के तहत, एक हैल्थकेयर प्रणाली अपने स्तर पर तभी बेस्ट फैसिलिटी दे सकती है जब दवाई आसानी से मिल सकें। फार्मास्युटिकल्स (औषधीय उत्पाद, टीके, गर्भ निरोधक, निदान एवं मेडिकल आपूर्ति) आज किसी भी हॉस्पिटल में मैन पावर के बाद दूसरा सबसे बड़ा खर्च बन गया है।

रोग प्रतिरोधक समस्या बनी

बिना जरूरत मेडिसिन का उपयोग हैल्थकेयर के सभी स्तरों पर रोका जाना चाहिए, क्योंकि इससे संसाधनों की कमी होती है। वहीं लोगों में रोग प्रतिरोधात्मक क्षमता का कम होना आज एक वैश्विक समस्या बन गई है। नकली दवाइयां क्वालिटी मेडिसिन की उपलब्धियों के लिए प्रॉब्लम्स बनने लगी। डॉ. गुरबानी ने बताया कि भारत में 50 फीसदी पेशेंट सही मेडिसिन नहीं लेते। भारत में नेशनल एक्रीडेशन बोर्ड फॉर हॉस्पिटल्स एंड हैल्थकेयर (एनएबीएच) और दूसरे देशों की एक्रीडेशन बोर्ड्स ने डीटीसी/डीपीसी की आवश्यकता को जरूरी बताया।